शेरशाह का प्रशासन

डॉ. ए.एल. श्रीवास्तव के अनुसार,"शेरशाह मध्यकालीन भारत के महान शासन-प्रबंधकों या सुधारकों में से एक था परन्तु उसने किसी नई शासन व्यवस्था को जन्म नहीं दिया। उसके द्वारा किये गये शासन-सुधार उसके पूर्व कभी न कभी लागू रह चुके थे। इसलिए शेरशाह को व्यवस्था प्रवर्तक न मानकर महान शासन-सुधारक माना गया है। इतना तो निश्चित है कि पूर्व सुल्तानों द्वारा किये गये प्रयोगों का लाभ लेते हुए उसने उन्हें इस तरह लागू किया कि वे अधिक क्रांतिकारी और नये लगने लगे।

केन्द्रीय शासन

शेरशाह कालीन प्रशासनिक व्यवस्था के विषय में इतना तो निश्चित है कि शेरशाह मुगल शासकों के समान सत्ता के मंत्रियों में विकेन्द्रीकरण के पक्ष में नहीं था। उस का विचार था कि मुगलों ने मंत्रियों को अत्यधिक अधिकार दे दिए थे। जिनका वे दुरूप्रयोग करते थे, शेरशाह की शक्ति एंव सत्ता सर्वोच्च थी।

किन्तु शेरशाह निंरकुश होते हुए भी एक प्रजावत्सल शासक था। शासन के सभी कार्य वह जनकल्याण की भावना से करता था। शासन की सुविधा के लिए उसने सल्तनतकालीन व्यवस्था के आधार पर ही अनेक विभागों की स्थापना की तथा मंत्रियों को इन विभागों का उत्तरदायित्व सौपा परंतु शासन की नीति का निर्धारण एंव उसमें किसी प्रकार के परिवर्तन का अधिकार मंत्रियों को नहीं था। उनके द्वारा स्थापित प्रमुख विभाग निम्नलिखित थे--

1. दीवान-ए-वजारत

यह विभाग आर्थिक मामलों की देखभाल करता था। इसका अध्यक्ष वजीर होता था। दूसरे शब्दों में, इसे प्रधानमंत्री कहा जा सकता था। यह अन्य मंत्रियों के कार्यों की भी देखभाल करता था।

2. दीवान-ए-आरिज

इस विभाग का प्रमुख आरिजे मुमालिक होता था। सैनिकों की भर्ती संगठन तथा इसके नियंत्रण का अधिकार उसी के हाथ में था। इसके अतिरिक्त, सैनिकों तथा असैनिक अधिकारियों के वेतन निर्धारण की व्यवस्था तथा युद्ध क्षेत्र में सेना की देखभाल का उत्तरदायित्व भी उसके हाथ था।

3. दीवान-ए-इंशा

यह सामान्य प्रशासन विभाग था जिसके अधिकारी का प्रमुख कार्य सरकारी आदेशो आदि का पालन करवाना व लिपिबद्ध करना था।

4. दीवान-ए-काजी

यह सामान्य प्रशासन विभाग था जिसके अधिकारी का प्रमुख काजी होता था। इसका कार्य निष्पक्ष न्याय प्रदान करना था।

5. दीवान-ए-रसालत

यह एक प्रकार से विदेश विभाग के समान होता था। इस विभाग के प्रमुख की तुलना विदेश मंत्री से की जा सकती है। विदेशों से संबंध, संधि पत्र, व्यवहार, राजदूत भेजना, विदेशी प्रतिनिधियों का स्वागत तथा उन्हें सम्राट के पास पहुचांना इसका प्रमुख काम था।

6. दीवान-ए-वरीद

यह गुप्तचर विभाग था जिसके अधिकारी को बारी-ए-मुमालिक कहा जाता था।

इस प्रकार उपरोक्त विभागों की सहायता से शेरशाह केन्द्रीय प्रशासन करता था। अपने राज्य के प्रत्येक मामले की देखरेख में वह पूरी रूचि लेता था।

जारी.....